नवम्बर: 2023

वर्ष : 7 अंक : 2

सिफरी मासिक समाचार

दीपावली और गुरु नानक जयंती की हार्दिक शुभकामनाएँ

नील क्रांति की ओर अग्रसर

निदेशक की कलम से

"अनुशासन, लक्ष्य और उपलब्धि के बीच का सेतु है।" - जिम रॉन

सर्वप्रथम आप सभी को दीपावली और गुरु नानक जयंती की हार्दिक शुभकामनाएँ...

संस्थान का मासिक न्यूजलेटर के इस अंक में अक्टूबर, 2023 में संस्थान गतिविधियों और कार्यक्रमों की झलकियां प्रस्तुत है।

दीपावली का त्योहार पूरे देश भर में बड़े हर्षोल्लास से मनाया जाता है और बुराई पर अच्छाई और अंधकार पर प्रकाश की विजय को दर्शाता है। घरों के प्रत्येक कोने, चारदीवारी, आँगन के साथ सड़कें विभिन्न रंगों और आकारों की रोशनी से सजे हुए बहुत ही मनमोहक लगते है।

संस्थान में अनुसंधान के साथ मुख्यालय बैरकपुर और इसके क्षेत्रीय केंद्रों द्वारा प्रशिक्षण तथा जन जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए जिनका उद्देश्य मछुआरों के कौशल विकास सह संस्थान के तकनीकों का प्रचार-प्रसार करना है।

शुभकामनाओं सहित,

(बसन्त कुमार दास)

भा॰कृ॰अनु॰प॰ -केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने 'राष्ट्रीय डॉल्फिन दिवस' मनाया

स्वस्थ जलीय वातावरण पृथ्वी के समग्र कल्याण में योगदान देता है। इसलिए डॉल्फिन संरक्षण उन प्रजातियों और मनुष्यों के अस्तित्व को सुनिश्चित करने में मदद करेगा जो अपने जीवन के लिए जलीय पारिस्थितिकी तंत्र पर निर्भर हैं। डॉल्फ़िन एक स्वस्थ जलीय पारिस्थितिकी तंत्र सूचक हैं। अपने संरक्षण कार्यक्रम में नदी डॉल्फ़िन और समुद्री डॉल्फ़िन दोनों को शामिल करने के लिए 15 अगस्त, 2020 को माननीय प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा "प्रोजेक्ट डॉल्फ़िन" लॉन्च किया गया था। डॉल्फ़िन के महत्व के कारण,

पर्यावरण मंत्री भूपेन्द्र यादव ने डॉल्फ़िन संरक्षण के लिए जागरूकता बढ़ाने के लिए 5 अक्टूबर को "राष्ट्रीय डॉल्फ़िन दिवस" घोषित किया, जिसे हर साल मनाया जाता है।

इस दिन को उल्लेखनीय बनाने के लिए, भा॰कृ॰अनु॰प॰ -केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने नमामि गंगे कार्यक्रम के तहत हुगली नदी के तट पर शेओराफुल्ली घाट पर 5 अक्टूबर, 2023 को 'राष्ट्रीय डॉल्फ़िन दिवस' मनाया। इस अवसर पर, 100 से अधिक कर्मियों जिनमें सक्रिय मछुआरों, सामाजिक कार्यकर्ता और नदी के किनारे रहने वाले छात्रों ने भाग लिया और उन्हें इस दिन के बारे में जागरूक किया गया।

संदेश में, भा॰कृ॰अनु॰प॰ - केंद्रीय अंतर्स्थलीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के निदेशक और एनएमसीजी परियोजना के प्रधान अन्वेषक डॉ. बसंत कुमार दास ने बताया कि नदी डॉल्फ़िन सहित समुद्री स्तनधारियों की 30 से अधिक विभिन्न प्रजातियाँ भारतीय जल में पाई जाती हैं। गंगा नदी की डॉल्फ़िन (प्लैटनिस्टा गैंगेटिका) का घर केवल गंगा-ब्रह्मपुत्र प्रणालियाँ ही हैं। इसके अतिरिक्त, उन्होंने गंगा पारिस्थितिकी तंत्र के लिए एक संकेतक प्रजाति के रूप में गंगा डॉल्फ़िन के महत्व पर जोर दिया, क्योंकि पानी की गुणवत्ता और प्रवाह में भिन्नता के प्रति इसकी संवेदनशीलता पारिस्थितिकी तंत्र और इसमें रहने वाली अन्य प्रजातियों के समग्र स्वास्थ्य पर प्रकाश डालती है।

भारत में डॉल्फ़िन को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, इसलिए उनके बारे में जानकारी फैलाना अति महत्वपूर्ण है। जागरूकता और संवेदीकरण कार्यक्रम के माध्यम से स्थानीय लोगों को विभिन्न नदी संरक्षण उपायों के बारे में जागरूक कियाजाना चाहियें। यह हाल ही में स्थापित "राष्ट्रीय डॉल्फ़िन दिवस" का घोषित लक्ष्य है। भा॰कृ॰अनु॰प॰ -केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. बसंत कुमार दास के समग्र मार्गदर्शन में, एनएमसीजी घटक II से जुड़े सभी वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं ने कार्यक्रम में सहायता की। सिफरी ने एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन फरक्का में किया, जिसमें 50 से अधिक मछुआरों ने भाग लिया।

भा॰कृ॰अनु॰प॰ - केंद्रीय अंतर्स्थलीय अंतर्स्थलीय मातास्यिकी अनुसंधान संस्थान ने "पूर्वोत्तर भारत के खुले पानी में मत्स्य पालन संवर्धन" पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया।

डॉ. बि.के. दास, निदेशक, भा॰कृ॰अनु॰प॰ - केंद्रीय अंतर्स्थलीय अंतर्स्थलीय मातास्यिकी अनुसंधान संस्थान और डॉ. एस. के. माझी, प्रमुख, भा॰कृ॰अनु॰प॰ -सीआईएफआरआई, छेत्रीय केन्द्र, गुवाहाटी के मार्गदर्शन में 26-29 सितंबर, 2023 तक संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी में "पूर्वोत्तर भारत के खुले पानी में मत्स्य पालन संवर्धन" पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम किया गया ।

कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. बी.के. भट्टाचार्य, प्रधान वैग्यानिक द्वारा किया गया, और डॉ. पी. दास, वरिष्ठ वैज्ञानिक, डॉ. एस. बोरा, वैज्ञानिक और सुश्री निति. शर्मा, वैज्ञानिक (सह-समन्वयक) द्वारा सहायता प्रदान की गई। प्रशिक्षण कार्यक्रम में 12 प्रतिभागियों (5 महिलाएँ और 7 पुरुष) ने भाग लिया। प्रतिभागियों में एसएफडीओ, डीओएफ, हाफलोंग दे एक, एएफडीसी लिमिटेड, गुवाहाटी और डीओएफ, गुवाहाटी के 5 मत्स्य प्रदर्शक; 46 मोराकालोंग बील, मोरीगांव से 4 बील मछुआरे; गर्जन बुलटजन बील, कामरूप (आर) और ताम्रंगा बील, बोंगाईगांव, असम और मत्स्य पालन एचआरडी पर काम करने वाले एक प्रतिष्ठित एनजीओ के 2 कर्मचारी शामिल थे; उद्घाटन सत्र के दौरान, छेत्रीय केन्द्र प्रमुख, डॉ. एस.के. माझी ने उत्तर-पूर्व भारत के खुले पानी में मत्स्य पालन वृद्धि पर केंद्र द्वारा किए गए हाल के कार्यों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने प्रतिभागियों से खुले जल निकायों के वैज्ञानिक प्रबंधन पर ज्ञान प्राप्त करने का आग्रह किया। प्रधान वैज्ञानिक एवं कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. बी.के. भट्टाचार्य ने प्रशिक्षण कार्यक्रम

की पृष्ठभूमि और उद्देश्य के बारे में बताया। 5 दिनों के मानव संसाधन विकास-केंद्रित कार्यक्रम के दौरान, केंद्र के वैज्ञानिकों और तकनीकी कर्मियों द्वारा व्यावहारिक कक्षाओं/प्रदर्शनों सहित कई विषयों का संचालन किया गया। पढ़ाये गए विषयों में मत्स्य पालन वृद्धि, जल और मिट्टी की गुणवत्ता प्रबंधन, पिंजरे और कलम संस्कृति, मछली बीज उत्पादन, मछली चारा और पोषण, मछली स्टॉक वृद्धि, जैविक समुदायों का महत्व, मछली रोग प्रबंधन, आदि था। मत्स्य पालन और जलीय कृषि प्रबंधन सजावटी मछली संस्कृति और रिकॉर्ड रखने की प्रमुख अवधारणाएं भी इशमें शामिल थी ।

समापन सत्र में, निदेशक डॉ. बि. के. दास ने प्रतिभागियों को ऑनलाइन मोड के माध्यम से संबोधित किया। उन्होंने पूर्वोत्तर भारत के खुले जल में मत्स्य पालन में वृद्धि पर संस्थान की हालिया गतिविधियों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने आजीविका और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने में खुले पानी में मछली पालन के महत्व पर भी जोर दिया और प्रशिक्षण कार्यक्रम के सफल समापन के लिए बधाई दी। डॉ. बी.के. भट्टाचार्य ने प्रशिक्षण कार्यक्रम की एक संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की। डॉ. सुलीप कुमार माझी ने प्रतिभागियों से बातचीत की और प्रशिक्षण के लिए प्रतिभागियों से फीडबैक मांगा। प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम की सराहना की और भविष्य में भा०कृ०अनु०प० -सीआईएफआरआई के ऐसे और प्रशिक्षण कार्यक्रमों में शामिल होने की कामना की। कार्यक्रम का समापन प्रशश्ति पत्र वितरण के साथ हुआ।

केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. प्रणव. दास द्वारा प्रमाण पत्र और औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

केंद्रीय अंतर्स्थलीय मातास्यिकी अनुसंधान संस्थान ने गोपालगंज जिले के युवा किसानों को प्रशिक्षित किया

बिहार का गोपालगंज जिला 1000 हेक्टेयर से अधिक मीठे पानी के जल क्षेत्र संसाधन से समृद्ध है। यह चौर और मौन जैसे खुले जल संसाधनों से भी समृद्ध है। वर्ष 2016-17 से, भा०कृ०अनु०प० - केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने गोपालगंज जिले के 132 किसानों को अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन पर प्रशिक्षित किया है। इस वर्ष भी, 5-11 अक्टूबर, के दौरान संस्थान में गोपालगंज जिले के किसानों के लिए कौशल विकास सह क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें कुल 31 युवा किसानों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।

कार्यक्रम का उद्घाटन संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास ने किया। इस दौरान उन्होनें कहा कि मछुआरों की स्थायी आजीविका सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए मात्स्यिकीप्रबंधन के विभिन्न पहलुओं पर कौशल विकास कार्यक्रम की जरूरत पर जोर दिया। उन्होंने मछुआरों से वैज्ञानिक ज्ञान और अनुप्रयोग प्राप्त करके, इष्टतम उत्पादन और उत्पादकता के लिए अपने उपलब्ध संसाधनों का पता लगाने का भी आग्रह किया।

प्रशिक्षण के दौरान, किसानों को तालाब निर्माण और प्रबंधन, मिट्टी और पानी की गुणवत्ता प्रबंधन, चारा और भोजन प्रोटोकॉल, सजावटी मछली सहित मात्स्यिकीप्रबंधन के विभिन्न पहलुओं को कवर करने वाले ऑन-फील्ड प्रदर्शनों के साथ-साथ घरेलू सैद्धांतिक और व्यावहारिक ज्ञान दोनों से अवगत कराया गया। मत्स्य खेती, मछलियों के प्रजनन पहलू, पोषण संबंधी आवश्यकताएं, मछली स्वास्थ्य प्रबंधन, बाड़े की संस्कृति, विभिन्न मछली संस्कृति गतिविधियों के आर्थिक पहलू, मत्स्य विपणन, मत्स्य पालन पर जलवायु का प्रभाव आदि भी शामिल थे । इसके अलावा, प्रशिक्षुओं को भा॰कृ॰अनु॰प॰ -सीआईएफए कल्याणी केंद्र, पूर्वी कोलकाता वेटलैंड (ईकेडब्ल्यू) के साथ-साथ गालिब स्ट्रीट (कोलकाता) आदि सजावटी मछली बाजार क्षेत्र के भ्रमण पर भी ले जाया गया। प्रशिक्षुओं ने संस्थान की फ़ीड मिल में सजावटी मछली पालन अभ्यास और मछली चारा तैयार करने की प्रक्रिया, बायो-फ्लॉक सिस्टम, रीसर्क्युलेटरी एक्वाकल्चर सिस्टम (आरएएस) का भी दौरा किया और जानकारी प्राप्त की। प्रशिक्षुओं को बुनियादी जल गुणवत्ता मानकों, स्थानीय रूप से उपलब्ध फ़ीड सामग्री का उपयोग करके मछली फ़ीड तैयार करने आदि जैसे विभिन्न आवश्यकता-आधारित पहलुओं पर व्यावहारिक प्रशिक्षण सुविधाएं प्रदान की गई हैं। डॉ. एस. सामंता, विभागाध्यक्ष, फ्राई प्रभाग; डॉ. आर.के. मन्ना, एचओडी, आरडब्ल्यूएफ डिवीजन और डॉ. एस.के. मन्ना, आरडब्ल्यूएफ डिवीजन के साथ इंटरैक्टिव सत्र के बाद प्रशिक्षुओं को प्रमाण पत्र वितरित किये गये। फीडबैक सत्र में प्रशिक्षुओं ने अपने ज्ञान के उन्नयन की समग्र संतुष्टि व्यक्त की और कहा कि वे इस जानकारी को उनके संबंधित जल संसाधनों में इस्तेमाल करेंगे।

सिफ़री, द्वारा पूर्वी कोलकाता वेटलैंड, पश्चिम बंगाल का दौरा : मछली के स्वास्थ्य प्रबंधन के प्रति किसानों की संवेदनशीलता उत्तपन करना

भा॰कृ॰अनु॰प॰ - केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने संस्थान के निदेशक, डॉ. बि.के. दास की देखरेख में 10 अक्टूबर 2023 को पूर्वी कोलकाता वेटलैंड, पश्चिम बंगाल में 'मछली की बीमारी निगरानी और स्वास्थ्य प्रबंधन' पर एक दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। पूर्वी कोलकाता बाढ़कृत आर्द्रभूमि निचले भागीरथी बेसिन में दो नदियों(हुगली नदी में उत्तरपश्चिम और पूर्व में विद्याधारीनदी) के बीच अक्षांश 22°25'N से 22°40'N और देशांतर 88°20'E से 88°35'E में स्थित है। ये आर्द्रभूमियाँ एक प्राकृतिक अपशिष्ट जल उपचार संयंत्र के रूप में कार्य करती हैं जो प्रतिदिन कोलकाता नगर से लगभग 800 मिलियन लीटर अपशिष्ट जल का उपचार कर पुन: उपयोग करती हैं। 154 से अधिक बड़ी भेरीज़ से युक्त ये आर्द्रभूमी कृषि खाद्य उत्पादन, संसाधन पुनर्प्राप्ति, बाढ़ में कमी, आवास और जैव विविधता बहाली सहित कई लाभ प्रदान करने के अलावा, मछली पालन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। मत्स्य स्वास्थ प्रबंधन कार्यक्रम में 29 पुरुषों और 11 महिलाओं सहित कुल 40 मछुआरों ने भाग लिया।

कार्यक्रम के दौरान, संस्थान के दल ने जलीय पर्यावरण के साथ-साथ रोगाणुरोधी प्रतिरोध मुद्दों, भारत में मीठे पानी के जलीय कृषि में मछली रोग प्रबंधन की स्थिति, जलीय कृषि विकास के लिए स्थायी दृष्टिकोण सहित मछली के रोग निगरानी और स्वास्थ्य प्रबंधन आदि के कई क्षेत्रों पर जानकारी साँझा की। सभा को संबोधित करते हुए, टीम ने मछुआरों को मछली पालन के लिए प्रेरित किया और उन्हें विभिन्न मछली पालन विधियों के लाभकारी प्रभाव के बारे में बताया, जैसे, आर्द्रभूमि से उत्पादन बढ़ाने के लिए पेन कल्चर। किसानों को हाल की वायरल बीमारियों, जैसे तिलापिया लेक वायरस और पार्वोवायरस, जिससे ओरियोक्रोमिस निलोटिकस में गंभीर संक्रमण और मृत्यु हो गई थी, के बारे में भी जागरूक किया गया। वैज्ञानिक टीम ने मछुआरों से भी बातचीत की और मछली की वृद्धि, बीमारी और फार्म प्रबंधन के मुद्दों पर चर्चा की। रोग की पहचान और उनके संभावित प्रबंधन उपायों पर अंग्रेजी और बंगला दोनों में तैयार किया गया पैम्फलेट प्रतिभागियों के बीच वितरित किया गया ताकि मछुआरों को उनके मछली फार्मों के बेहतर प्रबंधन के लिए जागरूक किया जा सके। वैग्यानिक डॉ. विकाश कुमार, श्री असीम कुमार जाना और एनएसपीएएडी चरण II परियोजना के शोधकर्ता श्री सौविक धर ने कार्यक्रम का कुशलतापूर्वक संचालन किया।

सतत विकास लक्ष्य 5 : सागर द्वीप, सुंदरबन में भा॰कृ॰अनु॰प॰ - सिफरी द्वारा एक पहल

सतत विकास लक्ष्य 5 (एसडीजी 5) 2015 में संयुक्त राष्ट्र द्वारा स्थापित 17 सतत विकास लक्ष्यों में से एक है। एसडीजी 5 लैंगिक समानता हासिल करने और सभी महिलाओं और लड़कियों को सशक्त बनाने पर केंद्रित है। लक्ष्य का उद्देश्य लिंग के आधार पर भेदभाव, हिंसा और हानिकारक प्रथाओं को समाप्त करना, महिलाओं के लिए नेतृत्व, शिक्षा और रोजगार में समान अवसर सुनिश्चित करना है। इसके अलावा, वर्ष 2023 के लिए अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की थीम "समानता और सशक्तिकरण में तेजी लाना" है। इस परिप्रेक्ष्य में, भा॰कृ॰अनु॰प॰ केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने "मिशन 3000" को हाथ में लिया है, यानी वर्ष 2023-24 में एससीएसपी/टीएसपी/एनईएच योजना के तहत देश भर में 3000 महिलाओं का साथ देकर उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बनाना है। इस संबंध में, सागर द्वीप, सुंदरबन में आदिवासी महिलाओं के बीच जागरूकता पैदा करके और इनपुट वितरित करके सतत विकास लक्ष्य 5 को संबोधित करने की पहल की गई थी।

भा॰कृ॰अनु॰प॰ - केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के एसटीसी कार्यक्रम के तहत मछली पालन के माध्यम से अपनी आजीविका को फिर से जीवंत करने के लिए तकनीकी इनपुट प्रदान करके सागर द्वीप की आबादी के सबसे कमजोर वर्गों में से आदिवासी समुदाय का समर्थन किया गया। पिछले 10 वर्षों में, केंद्रीय

अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने सागर द्वीप में मछली पालन के विभिन्न क्षेत्रों जैसे पिछवाड़े तालाब संस्कृति, नहर मत्स्य पालन और परित्यक्त जल में मत्स्य पालन में अपने वैज्ञानिक हस्तक्षेप की शुरुआत की है। इन हस्तक्षेपों ने लाभार्थियों के लिए आय सृजन

का एक वैकल्पिक स्रोत मिला है जिससे उनकी वार्षिक आय में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

'मिशन-3000' के तहत, सिफरी ने कमालपुर, सागर द्वीप, दक्षिण 24 परगना, पश्चिम बंगाल की आदिवासी मछुआरा-महिलाओं का समर्थन करने के लिए 13 अक्टूबर, 2023 को एक जागरूकता और इनपुट वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम में, माननीय श्री बंकिम चंद्र हाजरा, सुंदरबन क्षेत्र, प्रभारी मंत्री, पश्चिम बंगाल, सरकार, मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। माननीय मंत्री ने न केवल सुंदरबन में भा०कृ०अनु०प० - केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान की पहल और गतिविधियों की सराहना की, बल्कि यह भी सुनिश्चित किया कि 'मिशन-3000' की दिशा में सिफरी के भविष्य के प्रयासों में उनकी ओर से सभी प्रकार

का सहयोग हो। उन्होंने इस पहल के लिए केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकीअनुसंधान संस्थान और निदेशक डॉ. बि.के. दास को हार्दिक धन्यवाद दिया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि केवल भा०कृ०अनु०प० -सीआईएफआरआई के तकनीकी हस्तक्षेप और इनपुट वितरण

(मछली बीज, मछली चारा और दवा) के माध्यम से, सुंदरबन के मछुआरे टेबल आकार की मछली का उत्पादन करने में सक्षम हैं और अपनी आय बढ़ा सकते हैं।

डॉ. बि.के. दास, निदेशक, भा०कृ०अनु०प० - केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने ग्रामीण लोगों की आजीविका में मत्स्य पालन के महत्व पर जोर दिया और यह भी पुष्टि की कि सिफरी द्वारा सागर द्वीप की आदिवासी मछुआरों की आजीविका में सुधार के लिए उनकी मत्स्य पालन गतिविधियों में अपना समर्थन बढ़ाएगा। डॉ. दास ने मछुआरों को प्लास्टिक प्रदूषण और कीटनाशकों के उपयोग के बारे में बताया। इस कार्यक्रम में, सिफरी ने 252 अनसूचित जनजाति महिला-मछुआरों को मत्स्य पालन इनपुट वितरित किए, जिनके घर में 0.02 हेक्टेयर से 0.04 हेक्टेयर के औसत क्षेत्र के साथ तालाब हैं। इस कार्यक्रम में सागर द्वीप में रहने वाले अनुसूचित जनजाति समुदाय के सभी परिवारों को शामिल किया गया है। सीआईएफआरआई ने इस कार्यक्रम में अनुसूचित जनजाति घटक के तहत प्रत्येक लाभार्थी को 6 किलोग्राम आईएमसी बीज, 20 किलोग्राम चूना और 90 किलोग्राम मछली चारा वितरित किया।

यह कार्यक्रम स्वामी विवेकानन्द यूथ एंड कल्चरल सोसायटी नामक एक स्थानीय गैर सरकारी संगठन के सहयोग से आयोजित किया गया था। कुल मिलाकर, कार्यक्रम का आयोजन सिफरी के निदेशक के नेतृत्व में वैज्ञानिकों, तकनीकी कर्मचारियों और अनुसंधान विद्वानों की सिफरी टीम द्वारा सफलतापूर्वक किया गया।

असम के धेमाजी में सिफरी क्षेत्रीय केन्द्र द्वारा बील में मछली कल्चर पर जागरूकता सह मत्स्य खाद्य वितरण कार्यक्रम का आयोजन

भा॰कृ॰अनु॰प॰ -केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने निदेशक डॉ. बि.के. दास, निदेशक, और डॉ. एस.के. माझी, प्रमुख, भा॰कृ॰अनु॰प॰ -सिफरी क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी के मार्गदर्शन और नेतृत्व में "बील में मछली कल्चर पर जागरूकता सह मत्स्य खाद्य कार्यक्रम" का आयोजन 16 अक्टूबर, 2023 को धेमाजी, असम में किया।

यह कार्यक्रम जिले के मत्स्य किसानों और मछुआरों के लाभ के लिए आयोजित किया गया था। डॉ. रनोज पेगु, माननीय शिक्षा एवं सामान्य जनजाति एवं पिछड़ा वर्ग कल्याण मंत्री, असम सरकार ने मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। श्री प्रदान बरुआ, माननीय संसद सदस्य, लखीमपुर, असम सम्मानित अतिथि थे। श्री अंकुर भराली, आईएएस, जिला आयुक्त, धेमाजी, श्री तुलान कोंवर, अध्यक्ष, धेमाजी विकास प्राधिकरण, श्री लखीनाथ लागाचू, डीएफडीओ, धेमाजी गणमान्य व्यक्तियों में शामिल थे।

डॉ. एस.के. माझी ने अपने संबोधन में कार्यक्रम में सभी गणमान्य व्यक्तियों और मछुआरों का स्वागत किया। उन्होंने जिले और

राज्य के मत्स्य पालन क्षेत्र के विकास के लिए अपने अटूट समर्थन का वादा किया। श्री अंकुर भराली, आईएएस, जिला आयुक्त, धेमाजी ने अपनी प्रारंभिक टिप्पणी में जिले के मत्स्य पालन क्षेत्र के विकास पर जोर दिया और भा॰कृ॰अनु॰प॰ -सिफरी की पहल की सराहना की। माननीय संसद सदस्य श्री प्रदान बरुआ ने भी भा॰कृ॰अनु॰प॰ -सिफरी की गतिविधियों की सराहना की और कहा कि जिले में मत्स्य पालन की अपार संभावनाएं हैं और ग्रामीण विकास और रोजगार के लिए भी बहुत बड़ी संभावनाएं हैं।

उन्होंने हमारी स्वदेशी मछलियों के संरक्षण और उत्पादन पर ध्यान देने की जरूरत बताई। माननीय शिक्षा एवं सामान्य जनजाति एवं पिछड़ा वर्ग कल्याण मंत्री डॉ. रनोज पेगू ने भी भा॰कृ॰अनु॰प॰ -सिफरी की गतिविधियों की सराहना की और कहा कि स्वदेशी मछलियों की वैज्ञानिक खेती पर ध्यान देने की आवश्यकता है। उन्होंने जिले में मत्स्य पालन के

विकास के लिए भा०कृ०अनु०प० -सिफरी के साथ सहयोग करने का वादा किया। कार्यक्रम में उपस्थित जिले के 120 मछुआरों के बीच विकसित और निर्मित सीआईएफआरआई का कुल 10 टन मछली चारा वितरित किया गया। भा०कृ०अनु०प० -सिफरी गुवाहाटी केंद्र के वैज्ञानिक डॉ. एस. बोरा ने सभी गणमान्य व्यक्तियों, किसानों को उनकी उपस्थिति के लिए और निदेशक, सिफरी -सीआईएफआरआई और प्रमुख, भा०कृ०अनु०प० -सिफरी क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी को सफलतापूर्वक कार्यक्रम का आयोजन करने में उनके मार्गदर्शन के लिए हार्दिक धन्यवाद और आभार व्यक्त किया।

संस्थान ने मेघालय के री-भोई जिले के आदिवासी मछली किसानों को मत्स्य खाद्य वितरण

भा॰कृ॰अनु॰प॰ -केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (भा॰कृ॰अनु॰प॰ -सिफरी), क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी सरकार के मत्स्य पालन विभाग (डीओएफ) के सहयोग से, मेघालय सरकार ने राज्य के 50 आदिवासी मछली किसानों के लाभ के लिए 18.10.2023 को मेघालय के री-भोई जिले के नोंगपोह में "जागरूकता-सह-मत्स्य खाद्य वितरण कार्यक्रम" का आयोजन किया। कार्यक्रम का आयोजन डॉ. बि.के. दास, निदेशक, भा॰कृ॰अनु॰प॰ -सिफरी, बैरकपुर; डॉ. एस.के. माझी, प्रमुख, भा॰कृ॰अनु॰प॰ -सिफरी आरसी, गुवाहाटी; डॉ. बी.के. भट्टाचार्य, प्रधान वैज्ञानिक और एनईएच घटक के नोडल अधिकारी, और सुश्री मेदा ए खोंगजिलिव, मत्स्य पालन अधीक्षक, री-भोई जिला, मेघालय के मार्गदर्शन में किया गया। डॉ. प्रोनोब दास, डॉ. एस. सी. एस. दास, वरिष्ठ वैज्ञानिक (आयोजन सचिव); डॉ. एस. येंगकोकपम, डॉ. डी. के. मीना, वरिष्ठ वैज्ञानिक और डॉ. एस. बोरा, वैज्ञानिक (सह-संगठन सचिव) ने इस कार्यक्रम का समन्वयन किया। श्री एंड्रयू एल. मायर्थोंग, एमसीएस, सहायक आयुक्त, री-भोई जिला, मेघालय सरकार; श्री पॉल तारियांग, सहायक मत्स्य निदेशक, मेघालय, शिलांग; श्रीमती री-भोई जिले के रेशम उत्पादन के सहायक निदेशक आर.बी. लिंगवा ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। इसमें री-भोई जिले के 60 प्रतिभागियों (मछली किसानों और मत्स्य पालन अधिकारियों) ने भाग लिया।

सुश्री मेदा ए खोंगजिलिव ने एकदिवसीय कार्यक्रम के प्रतिभागियों और गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया। डॉ. बी.के. भट्टाचार्य ने उद्घाटन भाषण दिया और कार्यक्रम के उद्देश्य के बारे में बताया। उन्होंने उमियाम जलाशय में पिंजरे पर सफल परीक्षणों सहित मेघालय में खुले पानी में मत्स्य पालन के विकास के लिए संस्थान द्वारा किए गए अनुसंधान और विस्तार गतिविधियों की जानकारी दी। डॉ. प्रोनोब दास ने जलीय कृषि में मछली के चारे की भूमिका और उनके वैज्ञानिक गुणों के साथ विभिन्न आहार विधियों पर चर्चा की। उन्होंने प्रतिभागियों को दोनों संगठनों के बीच सफल सहयोगात्मक कार्य कार्यक्रमों के बारे में भी जानकारी दी। डॉ. एस. सी. एस. दास ने वैज्ञानिक विधि से मछली पालन के विभिन्न पहलुओं के बारे में बताया। श्री पॉल तारियांग ने राज्य में मत्स्य पालन के विकास के लिए अपना समर्थन जारी रखने के लिए भा॰कृ॰अनु॰प॰ -सिफरी को धन्यवाद दिया। उन्होंने बताया कि उमियाम जलाशय में भा॰कृ॰अनु॰प॰ -सिफरी द्वारा किए गए सफल पिंजरे पालन तकनीक परीक्षणों के आधार पर, डीओएफ, मेघालय ने राज्य में पीएमएसएसवाई कार्यक्रम के माध्यम से इसे लागू करने की योजना बनाई है। श्री एंड्रयू एल. मायरथोंग ने डीओएफ और भा॰कृ॰अनु॰प॰ -सिफरी से सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए मिलकर काम करने का आग्रह किया। भा॰कृ॰अनु॰प॰ -सिफरी के वैज्ञानिकों ने प्रतिभागियों से उच्च मछली उत्पादन, आय और आजीविका में वृद्धि के लिए वैज्ञानिक खेती के तरीकों को अपनाने का आग्रह किया। इस अवसर पर महिलाओं सहित 50 आदिवासी मछुआरों के बीच कुल 3500 किलोग्राम फ्लोटिंग फ़ीड वितरित किया गया। सुश्री मेदा ए. खोंगजिलिव ने औपचारिक धन्यवाद प्रस्ताव रखा और री-भोई जिले, जो एक महत्वाकांक्षी जिला है, के मछली किसानों को उनके समर्थन के लिए भा॰कृ॰अनु॰प॰ -सिफरी की सराहना की।

आईसीएआर-सिफ़री ने सिलचर, असम में जागरूकता-सह-इनपुट वितरण कार्यक्रम आयोजन किया

भा०कृ०अनु०प० -केंद्रीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी ने कछार कॉलेज, कछार सिलचर, असम मत्स्य विकास निगम लिमिटेड, गुवाहाटी और जिला मत्स्य विकास कार्यालय, सिलचर, के सहयोग से कछार कॉलेज, सिलचर में 'असम की बराक घाटी में कलम और पिंजरे जलीय कृषि को लोकप्रिय बनाने के लिए जागरूकता-सह-इनपुट वितरण कार्यक्रम' का आयोजन 31 अक्टूबर, 2023 को किया गया। शुरुआत में, कार्यक्रम के वरिष्ठ वैज्ञानिक और आयोजन सचिव डॉ. दीपेश देबनाथ ने अल्गापुर अनुआ, कछार और सोन बील, करीमगंज के पचास मछुआरों का स्वागत किया। उद्घाटन कार्यक्रम में, डॉ. नितु देबनाथ, सहायक प्रोफेसर, कछार कॉलेज, सिलचर; श्री हिमांशु प्रकाश दास, जिला मत्स्य विकास अधिकारी, सिलचर, कछार और श्री नेपाल रॉय, सहायक अभियंता, एएफडीसी लिमिटेड, सिलचर ने बील मत्स्य पालन से मछली उत्पादन बढ़ाने के महत्व पर जोर दिया, जिसके लिए वैज्ञानिक प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण की अत्यधिक आवश्यकता है। तकनीकी सत्र में, डॉ. डी. देबनाथ ने भारत में खुले जल मत्स्य पालन प्रबंधन में सिफरी की गतिविधियों के बारे में जानकारी दी, जिसमें बील मत्स्य पालन वृद्धि के लिए पिंजरे और पेन जलीय कृषि प्रौद्योगिकियों भी शामिल हैं। कार्यक्रम के आयोजन सचिव डॉ. श्यामल सी.एस. दास ने प्रतिभागियों से बातचीत की और उनके द्वारा उठाए गए सभी प्रश्नों के उत्तर दिए। श्री दिब्या ज्योति देव नाथ, मत्स्य विकास अधिकारी, सिलचर, कछार ने भी प्रतिभागियों द्वारा मछली रोगों पर उठाए गए सवालों के जवाब दिए। श्री प्रणय शेखर दत्ता, बील प्रबंधक, एएफडीसी लिमिटेड, सिलचर; श्री संदीप मिश्रा, मत्स्य प्रदर्शक, सिलचर, कछार; बसीर अहमद मजूमदार, अध्यक्ष, अल्गापुर मत्स्य विकास सहकारी समिति। लिमिटेड और रति रंजन दास, पूर्व अध्यक्ष, सोन बील कोऑपरेटिव सोसाइटी लिमिटेड, करीमगंज भी कार्यक्रम में उपस्थित थे। इस अवसर पर प्रतिभागियों के बीच कुल 6000 किलोग्राम सीआईएफआरआई केजग्रो फ्लोटिंग मछली चारा वितरित किया गया। कार्यक्रम का आयोजन डॉ. बि.के. दास, निदेशक, भा०कृ०अनु०प० -सिफरी , बैरकपुर और डॉ. एस.के. माझी, प्रमुख, भा०कृ०अनु०प० -सिफरी क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी के गतिशील नेतृत्व नईएच घटक के तहत किया गया था।

भा॰कृ॰अनु॰प॰ के पूर्व उप महानिदेशक (मत्स्य विज्ञान) ने संस्थान के बैंगलोर क्षेत्रीय केंद्र का दौरा किया

डॉ. बी. मीनाकुमारी, पूर्व उप महानिदेशक (मत्स्य विज्ञान), भा॰कृ॰अनु॰प॰ , नई दिल्ली; अध्यक्ष, अनुसन्धान सलाहकार समिति, भा॰कृ॰अनु॰प॰ -सिफरी ने 01 नवंबर 2023 को भा॰कृ॰अनु॰प॰ -सिफरी , बैंगलोर के क्षेत्रीय केंद्र का दौरा किया। उन्होंने केंद्र के वैज्ञानिकों और कर्मचारियों के साथ बातचीत की और वैज्ञानिकों को देश में मत्स्य पालन के विकास के लिए नवीन विचारों पर काम करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में अनुसंधान पर ध्यान केंद्रित करने पर जोर दिया। उन्होंने सतर्कता जागरूकता कार्यक्रम के एक भाग के रूप में "कार्य नैतिकता" पर भी बात की।

मुख्य शोध उपलब्धियां

- अरुणाचल प्रदेश की कामेंग नदी में कामेंग जलविद्युत परियोजना के बहाव क्षेत्र में पर्यावरणीय प्रवाह मानसून पूर्व अवधि के दौरान 35 क्यूमेक अनुमानित किया गया था। इस प्रवाह की गहराई 0.5 मीटर और वेग 0.4 मीटर/सेकेंड है जो इस नदी में महासीर प्रजाति पालन और संवर्धन के लिए उपयुक्त हो सकता है ।
- मछली के प्रजनन पर उभरते प्रदूषक, बिस्फेनॉल के आँकलन से ज़ेब्राफिश में अंतःस्रावी विघटनकारी क्षमता का पता लगाया जा सकता है ।
- सितंबर 2023 के दौरान गंगा नदी के प्रयागराज खंड से मछली की लैंडिंग 10.455 टन थी, जो सितंबर 2022 की तुलना में कुल मछली पकड़ में लगभग 58.20% की वृद्धि दर्शाती है।
- अनुसूचित जाति घटक के तहत, सुंदरबन में सागर द्वीप के 252 आदिवासी कृषक महिलाओं को उनके घर के पीछे भाग में स्थित तालाबों में मछली पालन को विकसित करने और उनके आर्थिक सशक्तिकरण के लिए आदान उपलब्ध कराया गया है।

बैठकें

- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 8 अक्टूबर 2023 को लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, जालंधर में भारतीय विज्ञान कांग्रेस एसोसिएशन की बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 3 अक्टूबर 2023 को कॉलेज ऑफ फिशरीज, सेंट्रल एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी (इम्फाल) त्रिपुरा में रजत जयंती वर्ष समारोह सह 26वें स्थापना दिवस में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों ने दिनांक 10-13 अक्टूबर 2023 तक कोच्चि, केरेला में XVI कृषि विज्ञान कांग्रेस में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने दिनांक 12 अक्टूबर 2023 को राष्ट्रीय गंगा स्वच्छ मिशन परियोजना के तीसरे चरण की अंतिम मंजूरी के लिए नई दिल्ली में एनएमसीजी बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों ने दिनांक 17-19, अक्टूबर 2023 के दौरान महाबलीपुरम, तमिलनाडु में बीओबीपी-आईजीओ और एनएफडीबी द्वारा आयोजित "अंतर्राष्ट्रीय मत्स्य पालन शासन में मुख्यधारा के जलवायु परिवर्तन और भारत-प्रशांत क्षेत्र में मत्स्य पालन प्रबंधन उपायों को मजबूत करने" पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

विशेष गतिविधियां

- संस्थान ने दिनांक 10-13 अक्टूबर, 2023 के दौरान कोच्चि, केरल में XVI कृषि विज्ञान 2023 कांग्रेस और एएससी एक्सपो के अवसर पर आयोजित प्रदर्शनी में भाग लिया।
- संस्थान ने दिनांक 17-19 अक्टूबर, 2023 के दौरान चेन्नई में FAO, BoBP, DoF, GoI द्वारा आयोजित जलवायु परिवर्तन पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान आयोजित प्रदर्शनी में भाग लिया। माननीय मंत्री, केंद्रीय मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी, श्री परषोत्तम रूपाला ने प्रदर्शनी में सिफरी के स्टॉल का दौरा किया और विशेष रूप से जलवायु परिवर्तन के क्षेत्र में सिफरी के अनुसंधान गतिविधियों पर चर्चा की।
- दिनांक 06.10.2023 को रामपारा वेटलैंड, बरहामपुर, मुर्शिदाबाद, पश्चिम बंगाल के मछली किसानों के लिए मछली स्वास्थ्य प्रबंधन पर एक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया था। जागरूकता कार्यक्रम में कुल 78 मछली पालकों ने भाग लिया।
- संस्थान ने दिनांक 13 अक्टूबर 2023 को पश्चिम बंगाल के दक्षिण 24 परगना के सुंदरबन के सागर द्वीप में आदिवासी उप-योजन घटक के तहत "आदिवासी मछुआरों के लिए संवेदीकरण और आदान वितरण कार्यक्रम" पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया । इस अवसर पर, सागर द्वीप के विभिन्न गावों से 252 आदिवासी महिलाओं ने भाग लिया ।

अन्य

- संस्थान ने दिनांक 02-31 अक्टूबर 2023 तक स्वच्छता पर विशेष अभियान शुरू किया। इस अभियान के तहत अधिकारियों और कर्मचारियों ने संस्थान मुख्यालय, क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्रों, नदी घाटों, गांवों आदि में स्वच्छता अभियान आयोजन द्वारा लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया।
- असम के करीमगंज जिले के सोन बील (400 हेक्टेयर जल प्रसार क्षेत्र) में संस्थान द्वारा विकसित पेन में मछली पालन तकनीक को सफलतापूर्वक अपनाया गया है। वर्तमान में बील के विभिन्न भागों में लगभग 1000 पेन क्षेत्र स्थापित किए गए हैं। इनमें से प्रत्येक पेन क्षेत्र का आकार लगभग 1-2 हेक्टेयर रखा गया था ।
- राष्ट्रीय रैंचिंग कार्यक्रम के तहत बैरकपुर में गंगा नदी में 30000 बड़ी आकार की कार्प अंगुलिकाओं को छोड़ा गया ।

सिफरी समाचार पत्रों एवं संचार माध्यम में

Livelihood upliftment of the tribal women of SaliaSahi, Bhubaneswar Odisha through ornamental fish rearing

Bhubaneswar,(KCN): ICAR-CIFRI consistently promotes ornamental fish culture as a means of empowering rural women in different parts of India including West Bengal, Jharkhand, and Odisha with the primary aim to make them self-employed by providing alternative sources of income to the rural tribal women under the STC program.

Under this vision, an awareness cum input distribution program was organized at the SaliaSahi area of Bhubaneswar, Odisha for the tribal women under the STC program on 08th October 2023.

Under the able leadership and guidance of Dr. B. K. Das, Director, ICAR-CIFRI, Barrackpore, 16 units of FRP ornamental fish-rearing tanks were distributed to the tribal women beneficiaries in the presence of the Charter President Dr. Smita Sinha, Director Club Admin Rtn. ShibabrataKar and other members of the Rotary Club of Bhubaneswar Flamingo. A total of 30 women beneficiaries participated in this program and got motivated to take up ornamental fish rearing with the support of ICAR-CIFRI. Further, proper hands-on practical training on ornamental fish keeping and breeding will be provided to the beneficiaries at ICAR-CIFRI Barrackpore to strengthen the theoretical and practical skills for ornamental fish culture. The program was jointly organized by ICAR-CIFRI, Barrackpore, and the Rotary Club of Bhubaneswar Flamingo.The program was coordinated by Mr. M. H. Ramteke and Dr. Aparna Roy under the supervision of Dr. B. K. Das, Director ICAR-CIFRI Barrackpore.

Ranching in river Ganga at Barrackpore under 'National Ranching Programme-2023'

Kolkata,(KCN): As a part of National Ranching program-2023 under Namami Gange programme a river ranching was conducted on 27 September, 2023 at Daspara ghat, Barrackpore, West Bengal, on the occasion of concluding workshop under NMCG project on "Stakeholders consultation cum consultative workshop on Hilsa fisheries improvement for sustainable fisheries and conservation in river Ganga".

The ranching programme was graced by several eminent scientist and academicians including Dr. Sandeep Behera, Consultant NMCG, Dr. D.K. De, Retired Principal Scientist of ICAR-CIFRI and renowned Hilsa expert. Expert from various field of fisheries like Dr. U. Bhowmik, Retired Principal Scientist & Former HoD of ICAR-CIFRI, Dr.Subrata Dasgupta (Retd. Principal Scientist of ICAR-CIFE), Dr. Ashim Kumar Nath, Department of Zoology,SBKU University, Mr. Rajdeep Mukherjee, Member of BoBP, Prof. Sudhir Kumar Das, WBUAFS, and Dr. Gayatri Tripathi, Principal Scientist, ICAR-CIFE. During the event 30 thousand advanced fingerlings of Indian Major Carps (catla, rohu, and mrigal) were ranched in river Ganga. Dr. B. K. Das, Director, CIFRI highlighted the significance of the ranching program and informed that, till date CIFRI have ranched more than 65 lakhs advanced fingerlings in different stretches of river Ganga covering West Bengal, Bihar, Uttar Pradesh, Jharkhand and Uttarakhand during the second phase of the esteemed NMCG Project.

Dr. Sandeep Behera, Biodiversity Consultant NMCG praised the efforts of ICAR-CIFRI to increase the fish production in river Ganga through their ranching programmes. He also added that rise in fish population through ranching will aid in increase of other aquatic animals in river Ganga including the Gangetic Dolphin. Along with the river Ranching program awareness program on dolphin, fish and hilsa fishery was also conducted. Active participation of local fishers including and civil residents was noticed in the programme. The overall program was successfully conducted with the whole hearted support from the CIFRI-NMCG team.

ICAR-CIFRI organized workshop on "Stakeholders consultation cum consultative workshop on Hilsa fisheries improvement for sustainable fisheries and conservation in river Ganga"

Kolkata,(KCN): A workshop under NMCG project on "Stakeholders consultation cum consultative workshop on Hilsa fisheries improvement for sustainable fisheries and conservation in river Ganga" was organized at ICAR-CIFRI, Barrackpore on 27thSeptember 2023. The workshop initiated with a warm welcome extended by Dr. A.K.Sahoo, Co-PI, NMCG Project and briefed on the objectives of the Workshop. Dr. Basanta Kumar Das, Director, ICAR-CIFRI in his opening remarks highlighted the importance of the hilsa and dolphin conservation in the river Ganga and the scientific interventions taken up by ICAR-CIFRI since 2018. Dr. Sandeep Kumar Behera, Consultant, National Mission for Clean Ganga (NMCG), Mr. Rajdeep Mukherjee, Policy analyst, Bay of Bengal Programme (BoBP-IGO), Mr. G. C. Das, Wild Life Institute of India (WII), Dr. D.K. Dey, Retired Principal Scientist of ICAR-CIFRI, Dr. U. Bhowmik, Retired Principal Scientist & Former HoD of REF Division, ICAR-CIFRI, Dr. Subrata Dasgupta, Retd. Principal Scientist of ICAR-CIFE, Dr. Ashim Kumar Nath, Professor, Department of Zoology, SBKU University, Prof. Sudhir Kumar Das, WBUAFS, and Dr. Gayatri Tripathi, Principal Scientist, ICAR-CIFE were graced the occasion as expert members. Dr. Sandeep Behera in his opening remarks highlighted the importance of the Hilsa fisheries improvement programme carried out by ICAR-CIFRI since 2018. He updated the status of fish locks operation in Farakka barrage and believed that the fish locks will provide the additional support towards upstream hilsa migration in the river Ganga.

Dr. B. K. Das, Director, ICAR-CIFRIoutlined the workshop with a brief presentation of the work carried out under NMCG Hilsa Project (Component II) for last 3 years. In the presentation, he highlighted the project's objectives, significant activities and achievements under the project.Dr. Das explained that more than 90,000 of adult Hilsa were ranched at the upstream of Farakka barrage with an aim to enhance the Hilsa stockin the middle stretch of the river Ganga. He briefed about the hilsa ranching procedure, tagging methods employed and the recovery of Hilsa in the upstream. Besides Hilsa egg and spawn were also ranched into the river for increasing the juvenile availability and the impact of ranching on hilsa population was also presented. Dr. B.K. Das also presented the pilot-scale experiments conducted under the project for captive breeding and rearing of Hilsa. Issues and challenges related to the restoration and conservation of Hilsa in river Ganga and their captive rearing was also addressed.

During the panel discussion, expert members were appreciated the work carriedout by ICAR-CIFRI particularly on there-appearance of Hilsa juveniles and adults in the upstream of the Farakka in river Ganga between Praygraj to Farakka due to ranching programme. They emphasized further detailed work on the identification of Hilsa breeding grounds and protect them from destructive fishing. A much research efforts were needed to augment the captive rearing of Hilsa under cages and other culture systems for domestication. They also discussed about the strategies related to the sustainable management of Hilsa in river Ganga and warrant cohesiveness between the state governments and research organization for hilsa fisheries management. Furthermore, challenges like illegal fishing using small mesh nets and brooder collection during peak seasons were pointed out to be the two utmost important issues. Fish farmers/ fishers from Godhakali, Diamond Harbour were also interacted with the expert members and raise few concerns regarding low Hilsa availability and agreed for the extended cooperation for CIFRI activities in future. Finally, the workshop ended formally with a vote of thanks proposed by Dr. D.K.Meena, Co-PI of NMCG. The programme was coordinated by Drs. A.K.Sahoo, D.K.Meena, Santhana Kumar and Mitesh Ramteke with the support of research scholars of NMCG Component II under the overall supervision of Dr. Basanta Kumar Das, Director, ICAR-CIFRI.

সংস্থার উপজাতীয় সম্প্রদায়ের উন্নতির জন্য পথ চলা শুরু

Swachhata Hi Seva Activities in West Bengal

sponsored 5-day training programme on "Inland Fisheries Management" for the fish farmers of Pakur, Jharkhand from 18 – 22nd September, 2023. A total of 21 farmers including a group of 6 women and one fisheries instructor from Pakur district have participated in the training programme. Pakur district of centrally located Jharkhand State is covered with forest and with hilly terrains. According to the district portal, this district is blessed with two dams and numerous small waterbodies like ponds and tanks. This training was conducted to enhance farmers' knowledge on scientific fish farming. The trainees were taught various aspects of fish farming such as pond construction and management. Natural fish food organisms in inland open waters, fish health management, fish feed preparation, composite fish culture, Ornamental fish culture etc. Besides, the trainees were given a demonstration cum practical orientation on the Ornamental fish culture, fish feed preparation, monitoring of some basic water quality and identification of some disease-causing fish pathogens during this training. The trainees were also sensitized with some basic knowledge of reservoir fisheries management, enclosure culture and Pangus culture in the reservoir as Pakur district is also blessed with through fisheries for livelihood improvement. The program has been oriented to strengthen the practical skills of the farmers for enhancing fish production in open waters including ponds & tanks, through on-field exposure visits and field demonstrations besides classroom sessions. About 86% of the the trainees expressed high level of satisfaction from the capacity building programme.

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, गणेश चंद्र, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान,(आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन), बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120, भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91; फैक्स: +91-33-25920388; ई- मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in

ISSN 0970-616X

सिफरी मसिक समाचार में निहित सामग्री प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुन: उत्पन्न नहीं की जा सकती है